पाठ - 6 शब्दार्थ

दस्तक देना	खटखटाना
सूक्ष्मदर्शी	छोटी वस्तुओं को देखने का यन्त्र
एनीमिया	खून की कमी के कारण उत्पन्न रोग
भानुमती का पिटारा	विभिन्न वस्तुओं का संग्रह
बिंबाणु	प्लेटलैट कण
दूषित	मैला, गंदा
धावा बोलना	हमला करना
ब्लड बैंक	रक्त एकत्र करने के लिए खोले गए बैंक
रक्त	खून
पीठ ठोकना	शाबाशी देना

पाठ के अभ्यास के प्रश्नोत्तर (भाग - 1)

1. रक्त के बहाव को रोकने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर:- रक्त के बहाव को रोकने लिए उस स्थान पर कसकर साफ़ कपड़ा बाँध देना चाहिए, क्योंकि दबाव पड़ने पर रक्त का बहना कम हो जाता है, जो उस व्यक्ति के लिए बड़ा लाभप्रद सिद्ध होता है फिर जल्दी ही हमें उस व्यक्ति को डॉक्टर के पास ले जाना चाहिए।

2. खून को 'भानुमती का पिटारा' क्यों कहा जाता है?

उत्तर:- 'भानुमती का पिटारा' हिन्दी में एक लोकोक्ति है जिसका अर्थ है एक पिटारे में कई तरह की वस्तुएँ। खून को 'भानुमती का पिटारा' कहा जाता है क्योंकि यदि सूक्ष्मदर्शी से खून की एक बूँद को जाँचा जाए तो उसमें लाखों की संख्या में लाल रक्त कण मौजूद मिलेंगे जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। इसके अलावा कुछ कण सफ़ेद तथा कुछ रंगहीन होते हैं। तरल भाग प्लाज्मा होता है रंगहीन कण प्लाज्मा में तैरते रहते हैं। इन्हीं विविधताओं के कारण खून को भानुमती का पिटारा कहा जाता है।

3. एनीमिया से बचने के लिए हमें क्या-क्या करना चाहिए?

उत्तर:- एनीमिया से बचने के लिए हमें पौष्टिक आहार का सेवन करना चाहिए। हमें अपने भोजन में उचित मात्रा में हरी सब्जियाँ, फल, दूध, अंडें व गोश्त खाना चाहिए ताकि हमारे शरीर को प्रोटीन, लौह-तत्व और विटामिन मिलते रहे जिससे हमारे शरीर में रक्त की कमी न हो।

4. पेट में कीड़े क्यों हो जाते हैं? इनसे कैसे बचा जा सकता है?

उत्तर:- पेट में कीड़े दूषित पानी और दूषित खाद्य पदार्थों के कारण होते हैं। इनसे बचने के लिए हमें सफाई से बने खाद्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए। भोजन करने से पहले हमें अच्छी तरह से हाथ धो लेना चाहिए एवं साफ़ जल ही पीना चाहिए। कुछ कीड़ों के लार्वे जमीन की ऊपरी सतह पर भी होते हैं इसलिए नंगे पैर इधर-उधर नहीं घूमना चाहिए, शौचालय का इस्तेमाल करने के पश्चात साबुन से भली-भांति हाथ-पैर धोने चाहिए। इस प्रकार के कुछ सफाई संबन्धित उपाय करने से हम पेट के कीड़ों से बीमार होने से बच सकते हैं।

5. रक्त के सफ़ेद कणों को 'वीर सिपाही' क्यों कहा गया है?

उत्तर:- रक्त के सफ़ेद कणों को 'वीर सिपाही' कहा गया है क्योंकि यह रोगों के कीटाणुओं को शरीर में घुसने नहीं देते, जहाँ तक संभव हो सके रोगी कीटाणु की कार्य क्षमता को शिथिल कर उनसे डटकर मुकाबला करते हैं। इस प्रकार वे बहुत से रोगों से हमारी रक्षा करते हैं।